उत्तर भारत में कपास की फसल में नाशीजीव चेतावनी एवं प्रबंधन सलाह

****

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसन्धान केंद्र, नई दिल्ली की कपास टीम द्वारा 29 जुलाई से 01 अगस्त 2019 के दौरान पंजाब (फाजिल्का, मुक्तसर), हरियाणा (सिरसा, हिसार) एवं राजस्थान (हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर) में कपास के खेतों का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में पाया गया कि कपास की फसल फूल व टिंडे बनने की अवस्था में है, अधिकतर खेतों में सफ़ेद मक्खी और थ्रिप्स की संख्या कुछ खेतों को छोड़कर आर्थिक क्षति स्तर से कम है जबकि हरा तेला (जेस्सिड) की संख्या व् क्षति के लक्षण अधिकतर खेतों में आर्थिक सीमा के निकट तथा अधिक हैं। ज्यादातर खेतों में मरोडिया (ClCuD) रोग के शुरुवाती लक्षण 1-2 ग्रेड के पाए गए हैं इसके अलावा क्रप्सोपरला मित्र कीट के अंडे व् लारवा 2-3 / पौधा मौजूद हैं। कुछ खेतों में पे रा विल्ट के लक्षण भी मौजूद हैं।

अतः किसानों को सलाह दी जाती है कि खेत की निगरानी जारी रखें और किसी भी घातक कीटनाशक के छिडकाव से बचें तथा फसल को स्वस्थ बनाये रखने के लिए पोटैशियम नाइट्रेट के 2 % की दर से साप्ताहिक अन्तराल पर स्प्रे करें। जहाँ हरा तेला तथा सफ़ेद मक्खी की संख्या बढ़ रही है वहां फ्लोनिकमिद 50 डब्ल्यू जी 60 ग्राम /एकड़ की दर से 200 लीटर प्रति पानी के साथ स्प्रे करें। तथा ध्यान रखें छिडकाव के लिए साफ़ पानी का प्रयोग करें। पेराविल्ट के लक्षण दिखने पर 24 घंटे के अन्दर 10 पी पी एम् कोबाल्ट क्लोराइड का स्प्रे करें

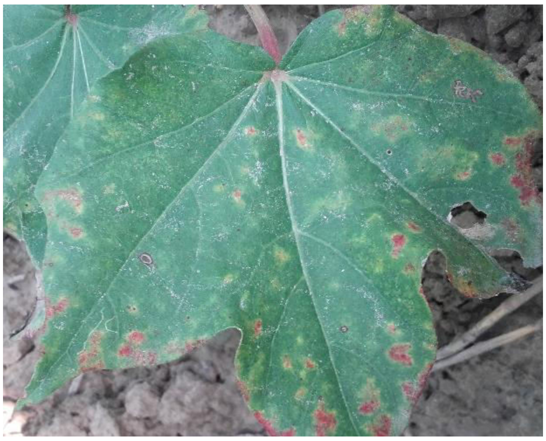

हरा तेला एवं मरोडिया

क्रप्सोपा लार्वा

सफ़ेद मक्खी

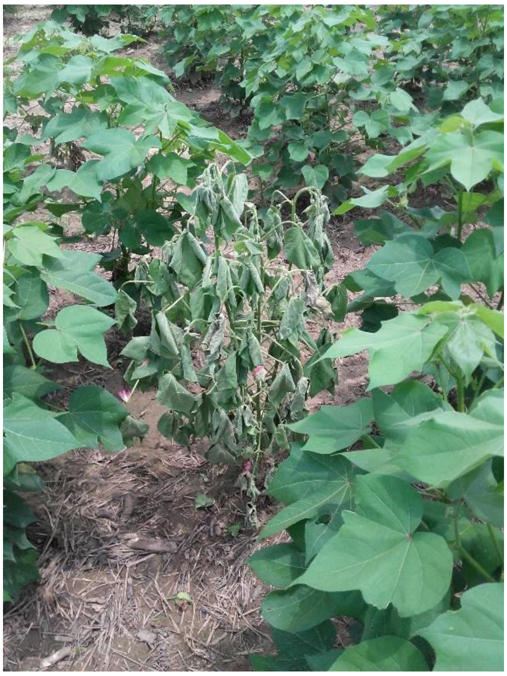

पेराविल्ट